



# Nishant Thakkar

06 Aug 1992

06:43 PM

Kalol

Model: Web-KundliPhal

Order No: 121858201

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 06/08/1992  
दिन \_\_\_\_\_: गुरुवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 18:43:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 31:16:23 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Kalol  
राज्य \_\_\_\_\_: Gujarat  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 23:15:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 72:32:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:39:52 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 18:03:08 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:05:51 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 15:04:25 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 06:12:26 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 19:18:34 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 13:06:08 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: दक्षिणायन  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: उत्तर  
ऋतु \_\_\_\_\_: वर्षा  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 20:33:11 कर्क  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 11:30:28 मकर

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: मकर - शनि  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: वृश्चिक - मंगल  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: अनुराधा - 1  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: शनि  
योग \_\_\_\_\_: ब्रह्म  
करण \_\_\_\_\_: कौलव  
गण \_\_\_\_\_: देव  
योनि \_\_\_\_\_: मृग  
नाड़ी \_\_\_\_\_: मध्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: विप्र  
वश्य \_\_\_\_\_: कीटक  
वर्ग \_\_\_\_\_: सर्प  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: जल  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: ना-नवीन  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: स्वर्ण - ताम्र  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: सिंह

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1914	श्रावण	15
पंजाबी	संवत : 2049	श्रावण	22
बंगाली	सन् : 1399	श्रावण	21
तमिल	संवत : 2049	आदी	22
केरल	कोल्लम : 1167	कर्कदम	22
नेपाली	संवत : 2049	श्रावण	22
चैत्रादि	संवत : 2049	श्रावण	शुक्ल 9
कार्तिकादि	संवत : 2049	श्रावण	शुक्ल 9

### पंचांग

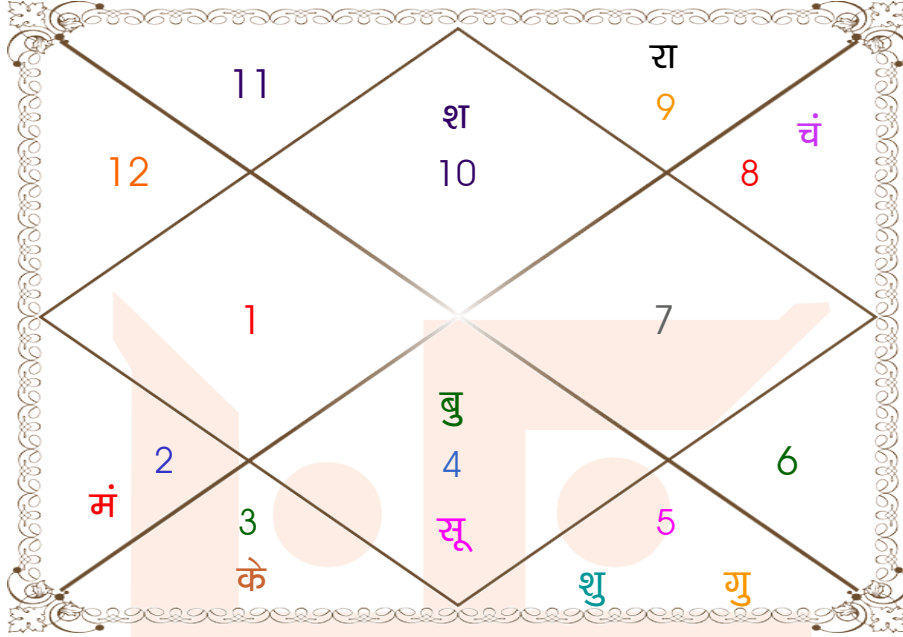
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 9  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 28:33:36  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 9  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : विशाखा  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 17:59:09 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : अनुराधा  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : शुक्ल  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 11:17:16 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : ब्रह्म  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : बालव  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 16:20:55 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
भयात \_\_\_\_\_ : 01:49:38  
भभोग \_\_\_\_\_ : 63:16:36  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : शनि 18 वर्ष 5 मा 10 दि

### घात चक्र

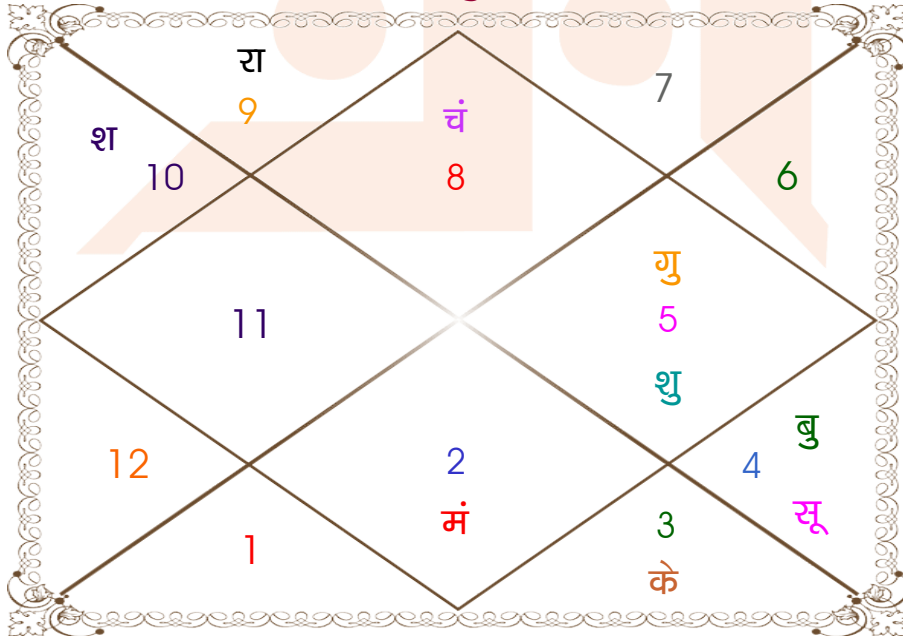
मास \_\_\_\_\_ : आश्विन  
तिथि \_\_\_\_\_ : 1-6-11  
दिन \_\_\_\_\_ : शुक्रवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : रेवती  
योग \_\_\_\_\_ : व्यतिपात  
करण \_\_\_\_\_ : गर  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : गरुड़  
लग्न \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
सूर्य \_\_\_\_\_ : मकर  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : वृष  
मंगल \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
बुध \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
गुरु \_\_\_\_\_ : मीन  
शुक्र \_\_\_\_\_ : मेष  
शनि \_\_\_\_\_ : कर्क  
राहु \_\_\_\_\_ : वृष

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुंडली

		मं	के
			बु सू
श ल			शु गु
रा	चं		

### लग्न कुंडली

मं		
के		
बु सू		श ल
गु शु		रा चं

विंशोत्तरी  
शनि 18वर्ष 5मा 10दि  
शनि

06/08/1992

17/01/2112

शनि	16/01/2011
बुध	16/01/2028
केतु	16/01/2035
शुक्र	16/01/2055
सूर्य	16/01/2061
चन्द्र	16/01/2071
मंगल	16/01/2078
राहु	16/01/2096
गुरु	17/01/2112

योगिनी

भ्रामरी 3वर्ष 10मा 18दि  
धान्या

25/06/2025

25/06/2028

धान्या	24/09/2025
भ्रामरी	24/01/2026
भद्रिका	25/06/2026
उल्का	25/12/2026
सिद्धा	26/07/2027
संकटा	25/03/2028
मंगला	25/04/2028
पिंगला	25/06/2028

Ankijotish Insights

Hyderabad Telangana India

7995233535

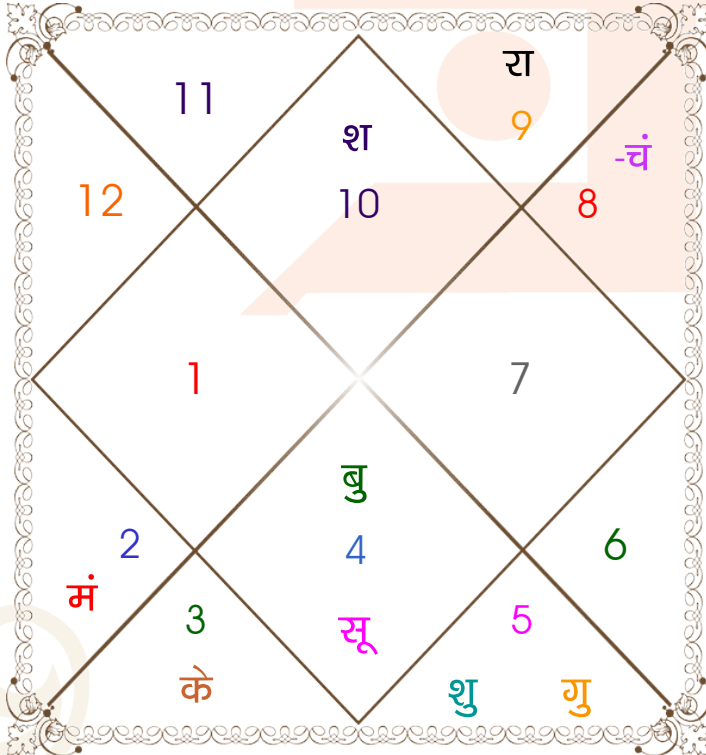
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मक	11:30:28	398:08:24	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	मंगल	---
सूर्य			कर्क	20:33:11	00:57:29	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	मित्र राशि
चंद्र			वृश्चि	03:43:24	12:48:09	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	नीच राशि
मंगल			वृष	13:28:18	00:39:43	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	राहु	सम राशि
बुध	व	अ	कर्क	14:26:05	00:37:03	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	राहु	शत्रु राशि
गुरु			सिंह	22:27:58	00:11:54	पूर्वाषाढा	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	मित्र राशि
शुक्र			सिंह	05:21:33	01:13:48	मघा	2	10	सूर्य	केतु	मंगल	शत्रु राशि
शनि	व		मक	21:26:32	00:04:29	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	स्वराशि
राहु			धनु	06:05:06	00:01:01	मूल	2	19	गुरु	केतु	राहु	नीच राशि
केतु			मिथु	06:05:06	00:01:01	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	चंद्र	नीच राशि
हर्ष	व		धनु	21:08:52	00:02:00	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	---
नेप	व		धनु	23:05:33	00:01:23	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	---
प्लूटो			तुला	26:24:08	00:00:14	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	केतु	---
दशम भाव			तुला	24:48:36	--	विशाखा	--	16	शुक्र	गुरु	बुध	--

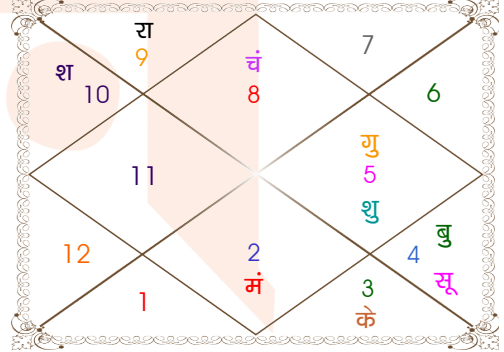
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:45:31

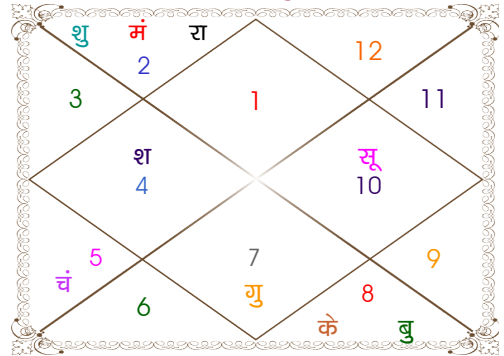
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



Anklyotish Insights

Hyderabad Telangana India

7995233535

## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	धनु 28:43:29	मकर 11:30:28
2	मकर 28:43:29	कुम्भ 15:56:30
3	मीन 03:09:32	मीन 20:22:33
4	मेष 07:35:35	मेष 24:48:36
5	वृष 07:35:35	वृष 20:22:33
6	मिथुन 03:09:32	मिथुन 15:56:30
7	मिथुन 28:43:29	कर्क 11:30:28
8	कर्क 28:43:29	सिंह 15:56:30
9	कन्या 03:09:32	कन्या 20:22:33
10	तुला 07:35:35	तुला 24:48:36
11	वृश्चिक 07:35:35	वृश्चिक 20:22:33
12	धनु 03:09:32	धनु 15:56:30

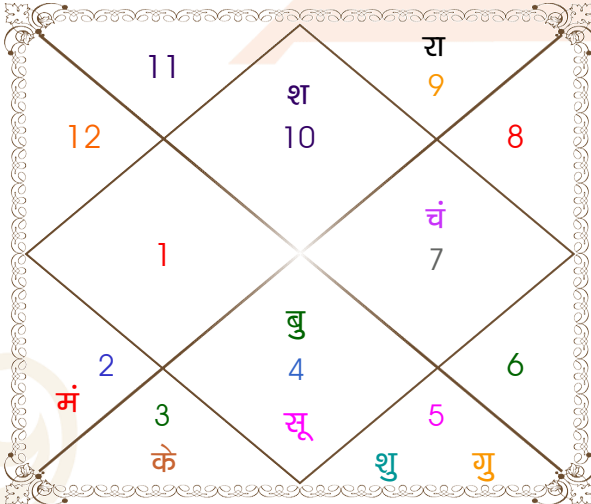
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	11:30:28
2	कुम्भ	19:03:53
3	मीन	24:50:36
4	मेष	24:48:36
5	वृष	20:17:17
6	मिथुन	14:32:50
7	कर्क	11:30:28
8	सिंह	19:03:53
9	कन्या	24:50:36
10	तुला	24:48:36
11	वृश्चिक	20:17:17
12	धनु	14:32:50

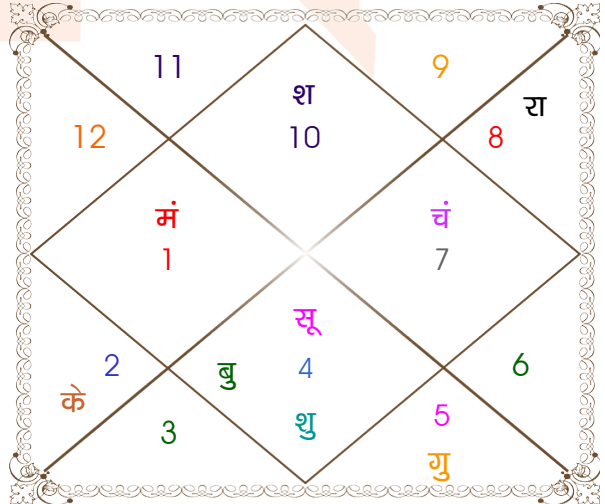
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



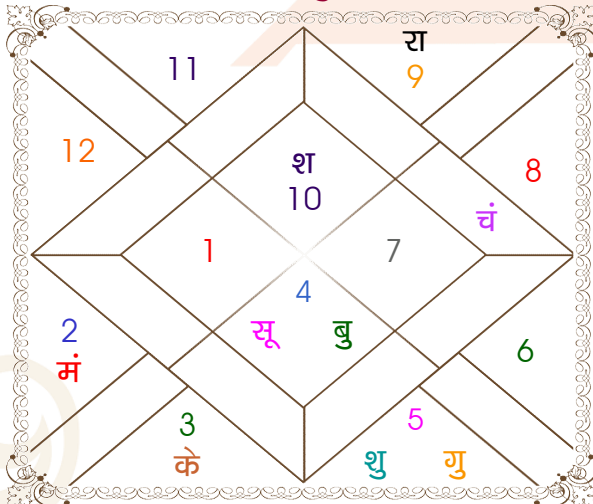
## कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----		----- अवस्था -----				ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	भातृ	पितृ	कुमार	मुदित	शयन	4.41	49 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	मृत	भीत	आगमन	0.02	34 %
मंगल	पुत्र	भातृ	युवा	शक्त	नृत्यलिप्सा	2.48	43 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	युवा	विकल	उपवेशन	0.00	62 %
गुरु	आत्मा	धन	वृद्ध	मुदित	कौतुक	6.87	59 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	बाल	खल	नृत्यलिप्सा	2.30	45 %
शनि	अमात्य	आयु	कुमार	स्वस्थ	आगम	3.69	43 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	भीत	उपवेशन	0.00	77 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	भीत	प्रकाश	0.00	77 %
कुल						19.77	

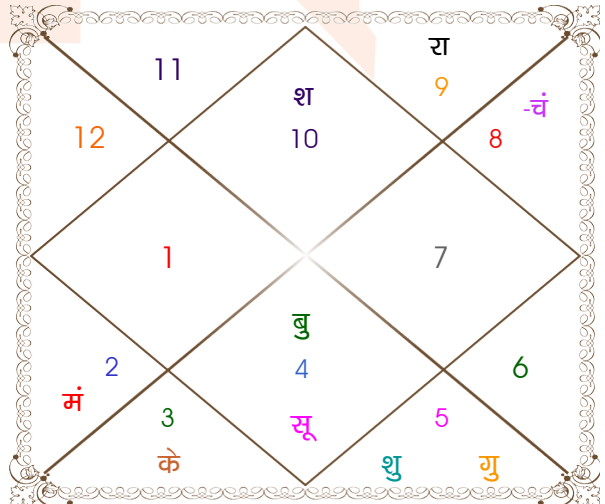
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा

### चलित कुंडली



### लग्न-चलित



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 18 वर्ष 5 मास 10 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
06/08/1992	16/01/2011	16/01/2028	16/01/2035	16/01/2055
16/01/2011	16/01/2028	16/01/2035	16/01/2055	16/01/2061
शनि 19/01/1995	बुध 14/06/2013	केतु 13/06/2028	शुक्र 18/05/2038	सूर्य 06/05/2055
बुध 28/09/1997	केतु 11/06/2014	शुक्र 14/08/2029	सूर्य 18/05/2039	चंद्र 04/11/2055
केतु 07/11/1998	शुक्र 11/04/2017	सूर्य 19/12/2029	चंद्र 16/01/2041	मंगल 11/03/2056
शुक्र 07/01/2002	सूर्य 15/02/2018	चंद्र 21/07/2030	मंगल 18/03/2042	राहु 03/02/2057
सूर्य 20/12/2002	चंद्र 18/07/2019	मंगल 17/12/2030	राहु 17/03/2045	गुरु 22/11/2057
चंद्र 20/07/2004	मंगल 14/07/2020	राहु 04/01/2032	गुरु 16/11/2047	शनि 04/11/2058
मंगल 29/08/2005	राहु 31/01/2023	गुरु 10/12/2032	शनि 16/01/2051	बुध 11/09/2059
राहु 05/07/2008	गुरु 08/05/2025	शनि 19/01/2034	बुध 16/11/2053	केतु 16/01/2060
गुरु 16/01/2011	शनि 16/01/2028	बुध 16/01/2035	केतु 16/01/2055	शुक्र 16/01/2061

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
16/01/2061	16/01/2071	16/01/2078	16/01/2096	17/01/2112
16/01/2071	16/01/2078	16/01/2096	17/01/2112	00/00/0000
चंद्र 16/11/2061	मंगल 14/06/2071	राहु 28/09/2080	गुरु 06/03/2098	शनि 07/08/2112
मंगल 17/06/2062	राहु 02/07/2072	गुरु 22/02/2083	शनि 17/09/2100	00/00/0000
राहु 17/12/2063	गुरु 08/06/2073	शनि 29/12/2085	बुध 24/12/2102	00/00/0000
गुरु 17/04/2065	शनि 17/07/2074	बुध 17/07/2088	केतु 30/11/2103	00/00/0000
शनि 16/11/2066	बुध 15/07/2075	केतु 04/08/2089	शुक्र 31/07/2106	00/00/0000
बुध 17/04/2068	केतु 11/12/2075	शुक्र 04/08/2092	सूर्य 19/05/2107	00/00/0000
केतु 16/11/2068	शुक्र 09/02/2077	सूर्य 29/06/2093	चंद्र 17/09/2108	00/00/0000
शुक्र 17/07/2070	सूर्य 17/06/2077	चंद्र 29/12/2094	मंगल 24/08/2109	00/00/0000
सूर्य 16/01/2071	चंद्र 16/01/2078	मंगल 16/01/2096	राहु 17/01/2112	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 18 वर्ष 5 मा 13 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>बुध - शनि</b> 08/05/2025 16/01/2028	<b>केतु - केतु</b> 16/01/2028 13/06/2028	<b>केतु - शुक्र</b> 13/06/2028 14/08/2029	<b>केतु - सूर्य</b> 14/08/2029 19/12/2029	<b>केतु - चंद्र</b> 19/12/2029 21/07/2030
शनि 11/10/2025 बुध 27/02/2026 केतु 26/04/2026 शुक्र 06/10/2026 सूर्य 25/11/2026 चंद्र 14/02/2027 मंगल 13/04/2027 राहु 07/09/2027 गुरु 16/01/2028	केतु 25/01/2028 शुक्र 19/02/2028 सूर्य 26/02/2028 चंद्र 10/03/2028 मंगल 18/03/2028 राहु 10/04/2028 गुरु 30/04/2028 शनि 23/05/2028 बुध 13/06/2028	शुक्र 24/08/2028 सूर्य 14/09/2028 चंद्र 19/10/2028 मंगल 13/11/2028 राहु 16/01/2029 गुरु 14/03/2029 शनि 20/05/2029 बुध 20/07/2029 केतु 14/08/2029	सूर्य 20/08/2029 चंद्र 31/08/2029 मंगल 07/09/2029 राहु 26/09/2029 गुरु 13/10/2029 शनि 03/11/2029 बुध 21/11/2029 केतु 28/11/2029 शुक्र 19/12/2029	चंद्र 06/01/2030 मंगल 19/01/2030 राहु 20/02/2030 गुरु 20/03/2030 शनि 23/04/2030 बुध 23/05/2030 केतु 04/06/2030 शुक्र 10/07/2030 सूर्य 21/07/2030
<b>केतु - मंगल</b> 21/07/2030 17/12/2030	<b>केतु - राहु</b> 17/12/2030 04/01/2032	<b>केतु - गुरु</b> 04/01/2032 10/12/2032	<b>केतु - शनि</b> 10/12/2032 19/01/2034	<b>केतु - बुध</b> 19/01/2034 16/01/2035
मंगल 29/07/2030 राहु 21/08/2030 गुरु 09/09/2030 शनि 03/10/2030 बुध 24/10/2030 केतु 02/11/2030 शुक्र 27/11/2030 सूर्य 04/12/2030 चंद्र 17/12/2030	राहु 12/02/2031 गुरु 04/04/2031 शनि 04/06/2031 बुध 28/07/2031 केतु 20/08/2031 शुक्र 23/10/2031 सूर्य 11/11/2031 चंद्र 13/12/2031 मंगल 04/01/2032	गुरु 19/02/2032 शनि 13/04/2032 बुध 31/05/2032 केतु 20/06/2032 शुक्र 16/08/2032 सूर्य 02/09/2032 चंद्र 30/09/2032 मंगल 20/10/2032 राहु 10/12/2032	शनि 12/02/2033 बुध 11/04/2033 केतु 04/05/2033 शुक्र 11/07/2033 सूर्य 31/07/2033 चंद्र 03/09/2033 मंगल 26/09/2033 राहु 26/11/2033 गुरु 19/01/2034	बुध 11/03/2034 केतु 01/04/2034 शुक्र 01/06/2034 सूर्य 19/06/2034 चंद्र 19/07/2034 मंगल 09/08/2034 राहु 02/10/2034 गुरु 20/11/2034 शनि 16/01/2035
<b>शुक्र - शुक्र</b> 16/01/2035 18/05/2038	<b>शुक्र - सूर्य</b> 18/05/2038 18/05/2039	<b>शुक्र - चंद्र</b> 18/05/2039 16/01/2041	<b>शुक्र - मंगल</b> 16/01/2041 18/03/2042	<b>शुक्र - राहु</b> 18/03/2042 17/03/2045
शुक्र 07/08/2035 सूर्य 07/10/2035 चंद्र 16/01/2036 मंगल 27/03/2036 राहु 26/09/2036 गुरु 07/03/2037 शनि 16/09/2037 बुध 08/03/2038 केतु 18/05/2038	सूर्य 05/06/2038 चंद्र 05/07/2038 मंगल 27/07/2038 राहु 19/09/2038 गुरु 07/11/2038 शनि 04/01/2039 बुध 25/02/2039 केतु 18/03/2039 शुक्र 18/05/2039	चंद्र 08/07/2039 मंगल 12/08/2039 राहु 11/11/2039 गुरु 01/02/2040 शनि 07/05/2040 बुध 01/08/2040 केतु 06/09/2040 शुक्र 16/12/2040 सूर्य 16/01/2041	मंगल 09/02/2041 राहु 14/04/2041 गुरु 10/06/2041 शनि 17/08/2041 बुध 16/10/2041 केतु 10/11/2041 शुक्र 20/01/2042 सूर्य 10/02/2042 चंद्र 18/03/2042	राहु 29/08/2042 गुरु 22/01/2043 शनि 15/07/2043 बुध 17/12/2043 केतु 19/02/2044 शुक्र 19/08/2044 सूर्य 13/10/2044 चंद्र 13/01/2045 मंगल 17/03/2045

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>शुक्र - गुरु</b> 17/03/2045 16/11/2047	<b>शुक्र - शनि</b> 16/11/2047 16/01/2051	<b>शुक्र - बुध</b> 16/01/2051 16/11/2053	<b>शुक्र - केतु</b> 16/11/2053 16/01/2055	<b>सूर्य - सूर्य</b> 16/01/2055 06/05/2055
गुरु 25/07/2045 शनि 27/12/2045 बुध 14/05/2046 केतु 09/07/2046 शुक्र 19/12/2046 सूर्य 05/02/2047 चंद्र 28/04/2047 मंगल 23/06/2047 राहु 16/11/2047	शनि 18/05/2048 बुध 28/10/2048 केतु 04/01/2049 शुक्र 16/07/2049 सूर्य 12/09/2049 चंद्र 17/12/2049 मंगल 22/02/2050 राहु 15/08/2050 गुरु 16/01/2051	बुध 12/06/2051 केतु 11/08/2051 शुक्र 31/01/2052 सूर्य 22/03/2052 चंद्र 17/06/2052 मंगल 16/08/2052 राहु 18/01/2053 गुरु 05/06/2053 शनि 16/11/2053	केतु 11/12/2053 शुक्र 20/02/2054 सूर्य 13/03/2054 चंद्र 18/04/2054 मंगल 13/05/2054 राहु 15/07/2054 गुरु 10/09/2054 शनि 17/11/2054 बुध 16/01/2055	सूर्य 22/01/2055 चंद्र 31/01/2055 मंगल 06/02/2055 राहु 23/02/2055 गुरु 09/03/2055 शनि 26/03/2055 बुध 11/04/2055 केतु 17/04/2055 शुक्र 06/05/2055
<b>सूर्य - चंद्र</b> 06/05/2055 04/11/2055	<b>सूर्य - मंगल</b> 04/11/2055 11/03/2056	<b>सूर्य - राहु</b> 11/03/2056 03/02/2057	<b>सूर्य - गुरु</b> 03/02/2057 22/11/2057	<b>सूर्य - शनि</b> 22/11/2057 04/11/2058
चंद्र 21/05/2055 मंगल 01/06/2055 राहु 28/06/2055 गुरु 22/07/2055 शनि 20/08/2055 बुध 15/09/2055 केतु 26/09/2055 शुक्र 26/10/2055 सूर्य 04/11/2055	मंगल 12/11/2055 राहु 01/12/2055 गुरु 18/12/2055 शनि 07/01/2056 बुध 25/01/2056 केतु 02/02/2056 शुक्र 23/02/2056 सूर्य 29/02/2056 चंद्र 11/03/2056	राहु 29/04/2056 गुरु 12/06/2056 शनि 03/08/2056 बुध 19/09/2056 केतु 08/10/2056 शुक्र 02/12/2056 सूर्य 18/12/2056 चंद्र 15/01/2057 मंगल 03/02/2057	गुरु 14/03/2057 शनि 29/04/2057 बुध 09/06/2057 केतु 27/06/2057 शुक्र 14/08/2057 सूर्य 29/08/2057 चंद्र 22/09/2057 मंगल 09/10/2057 राहु 22/11/2057	शनि 16/01/2058 बुध 06/03/2058 केतु 26/03/2058 शुक्र 23/05/2058 सूर्य 10/06/2058 चंद्र 08/07/2058 मंगल 29/07/2058 राहु 19/09/2058 गुरु 04/11/2058
<b>सूर्य - बुध</b> 04/11/2058 11/09/2059	<b>सूर्य - केतु</b> 11/09/2059 16/01/2060	<b>सूर्य - शुक्र</b> 16/01/2060 16/01/2061	<b>चंद्र - चंद्र</b> 16/01/2061 16/11/2061	<b>चंद्र - मंगल</b> 16/11/2061 17/06/2062
बुध 18/12/2058 केतु 05/01/2059 शुक्र 26/02/2059 सूर्य 13/03/2059 चंद्र 08/04/2059 मंगल 26/04/2059 राहु 12/06/2059 गुरु 23/07/2059 शनि 11/09/2059	केतु 18/09/2059 शुक्र 09/10/2059 सूर्य 16/10/2059 चंद्र 26/10/2059 मंगल 03/11/2059 राहु 22/11/2059 गुरु 09/12/2059 शनि 29/12/2059 बुध 16/01/2060	शुक्र 17/03/2060 सूर्य 04/04/2060 चंद्र 05/05/2060 मंगल 26/05/2060 राहु 20/07/2060 गुरु 07/09/2060 शनि 04/11/2060 बुध 25/12/2060 केतु 16/01/2061	चंद्र 10/02/2061 मंगल 28/02/2061 राहु 14/04/2061 गुरु 25/05/2061 शनि 12/07/2061 बुध 24/08/2061 केतु 11/09/2061 शुक्र 01/11/2061 सूर्य 16/11/2061	मंगल 28/11/2061 राहु 30/12/2061 गुरु 28/01/2062 शनि 02/03/2062 बुध 02/04/2062 केतु 14/04/2062 शुक्र 20/05/2062 सूर्य 30/05/2062 चंद्र 17/06/2062

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

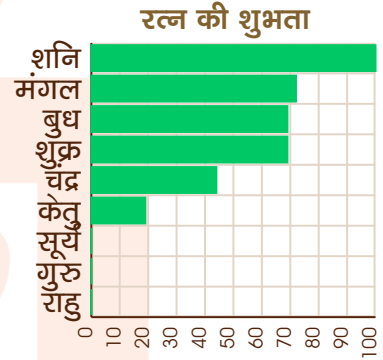
मूलांक	6
भाग्यांक	8
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 8
शत्रु अंक	1, 7,
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	100%	स्वास्थ्य, धन
मूंगा	मंगल	72%	सन्तति सुख, सुख, धनार्जन
पन्ना	बुध	69%	दम्पति, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
हीरा	शुक्र	69%	दुर्घटना से बचाव, सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	44%	हानि, दाम्पत्य कष्ट
लहसुनिया	केतु	19%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	0%	दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना
पुखराज	गुरु	0%	दुर्घटना, व्यय, पराक्रम हानि
गोमेद	राहु	0%	व्यय, दुर्घटना



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	16/01/2011	0%	19%	59%	75%	0%	75%	100%	0%	0%
बुध	16/01/2028	6%	19%	72%	81%	0%	75%	100%	0%	19%
केतु	16/01/2035	0%	19%	78%	69%	0%	75%	95%	0%	44%
शुक्र	16/01/2055	0%	19%	72%	75%	0%	81%	100%	0%	31%
सूर्य	16/01/2061	19%	53%	78%	69%	0%	56%	95%	0%	0%
चंद्र	16/01/2071	6%	59%	72%	75%	0%	69%	100%	0%	0%
मंगल	16/01/2078	6%	53%	84%	56%	0%	69%	100%	0%	31%
राहु	16/01/2096	0%	19%	59%	69%	0%	75%	100%	0%	0%
गुरु	17/01/2112	6%	53%	78%	56%	0%	56%	100%	0%	19%

## विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।  
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

### आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए नीलम रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

नीलम आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए मूंगा, पन्ना एवं हीरा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मोती रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परीक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

लहसुनिया, माणिक्य, पुखराज व गोमेद रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

## नीलम

आपकी कुंडली में शनि लग्न भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। शनि रत्न नीलम आपकी परिश्रम क्षमता एवं कार्यकुशलता में वृद्धि करेगा। सरकारी पक्ष व पिता से सहयोग प्राप्त होगा। प्रथम भाव में स्थित शनि की दृष्टि तृतीय, सप्तम एवं दशम भाव पर आ रही है। शनि रत्न नीलम की शुभता से भाग्योदय, सम्मान एवं लाभ की प्राप्ति होगी। जीवन साथी से सहयोग प्राप्त होगा। भाई-बंधुओं से सुख-स्नेह प्राप्ति में भी यह रत्न सहयोग करेगा। नीलम रत्न आपके पुरुषार्थ भाव में वृद्धि कर रहे हैं।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में शनि लग्नेश एवं द्वितीयेश है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप शनि के सभी शुभफल प्राप्त कर सकते हैं। यह नीलम रत्न आपको स्वभाव, शरीर आरोग्यता, आयु, यश एवं प्रतिष्ठा दे सकता है। इस रत्न को धारण करने से आपके संचित धन में वृद्धि हो सकती है। रत्न शुभता से स्वास्थ्य शुभ, व्यक्तित्व उज्ज्वल, अचल संपत्ति, कुटुंब, उत्तम भोजन, पारिवारिक सुख, वाणी की मधुरता एवं आरम्भिक शिक्षा उत्तम हो सकती है। नीलम रत्न प्रभाव से आपके परिवार में बढ़ोतरी हो सकती है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

## मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल पंचम भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको चंचलता देने के साथ-साथ आपको बुद्धिमत्ता देगा। यह रत्न आपको निर्णय लेने की योग्यता और विवेक क्षमता देगा। मूंगा रत्न के शुभ प्रभाव से आपकी बुद्धि सहज होगी। आपको तकनीकी विषयों में शैक्षिक योग्यता प्राप्त करने की ओर अग्रसर होंगे। मंगल रत्न मूंगे की शुभता से आप शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में शिक्षा ग्रहण कर सफलता पा सकते हैं। मूंगा रत्न आपको उत्साही और ऊर्जा शक्ति से युक्त बनाये रखेगा।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं एकादशेश है। आप मंगल रत्न मूंगा धारण कर मंगल ग्रह की शुभता बढ़ा सकते हैं। मूंगा रत्न धारण कर आप सुख-सुविधाओं से युक्त हो सकते हैं। इसकी शुभता से आप घर एवं भूमि-भवन संपत्ति के स्वामी बन सकते हैं। रत्न शुभता से आपको माता का स्नेह व संतोषी जीवन प्राप्त हो सकता है। मूंगा

रत्न स्वयं अर्जित धन में उन्नति व सफलता दे सकता है। रत्न शुभता से आप लोभ से बचेंगे तथा आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति के योग बन सकते हैं। मूंगा रत्न धारण से आप सफल व्यक्ति बन सकते हैं।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

### पन्ना

आपकी कुंडली में बुध सप्तम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको धनवान बनाएगा। रत्न शुभता से आपका विवाह कुलीन परिवार में होगा। यह रत्न आपको उदार और धार्मिक प्रवृत्ति का रखेगा। आपके लिये यह शुभ रत्न होने के कारण इसे धारण कर आप विद्वान, लेखक या सम्पादक हो सकते हैं। पन्ना आपको शिल्पकला में निपुण, चतुर और विनोदी बनाएगा। रत्न शुभता से आप एक कुशल व्यवसायी बनेंगे। क्रय-विक्रय विषयों से आपको लाभ प्राप्त होगा। व्यावसायिक साझेदारी से आपके अनुकूल फल प्राप्त होंगे।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व षष्ठेश है। बुध रत्न पन्ना आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण कर आप अपने भाग्य को प्रगतिशील बना सकते हैं। धर्म, कर्म और आध्यात्मिक विषयों से सहज जुड़ सकते हैं। पन्ना रत्न धारण से आप शत्रुओं को बुद्धिमानि से परास्त कर पायेंगे। यह रत्न आपको यथायोग्य सम्मान दिलाएगा। रत्न शुभता से आपके बाधित कार्य फिर से बनने लगेंगे। पन्ना रत्न की शुभता से आप अपने ऋणों का समय पर भुगतान करने में सफल रहेंगे। दैनिक व्यवसाय की कठिनाईयां रत्न शुभता से दूर हो सकती हैं।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का

होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

### हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र अष्टम भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। शुक्र रत्न हीरा आपको निडर और प्रसन्नचित्त बनायेगा। रत्न शुभता से आप विद्वान, मनस्वी, धर्मात्मा और सदाचारी बनेंगे। रत्न शुभता आपको शारीरिक, आर्थिक अथवा ग्रहस्थ सुख देगी। आपको किसी स्त्री के माध्यम से धन की प्राप्ति हो सकती है। हीरा रत्न आपको किसी ट्रस्ट के माध्यम से धनलाभ करा सकता है। आपको विदेश यात्रा करने के अवसर प्राप्त होंगे। सेवकों और वाहनों से प्राप्त सुख में बढ़ोतरी होगी। हीरा शेयर बाजार में विनियोजन से लाभ देगा।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में शुक्र पंचमेश एवं दशमेश है। आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न आपको माता-पिता से सुख, शारीरिक सौंदर्य की वृद्धि, भू-संपत्ति का सुख दिला सकता है। इस रत्न को धारण कर आप वाहन, राज्य व आजीविका क्षेत्र से शुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। लाभ व प्रतिष्ठा प्राप्ति के लिए भी आप यह हीरा रत्न धारण कर सकते हैं। यह रत्न पंचमेश का होने के कारण आपको विद्या, बुद्धि एवं संतान सुख को अनुकूल करने में सहयोग कर सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूठी में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा १ रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

### मोती

आपकी कुंडली में चंद्र एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर अत्यधिक चंचलता के कारण आप उचित निर्णय नहीं ले पाएंगे। आय क्षेत्रों में आपको अपनी योग्यता दिखाने के अवसर कम ही प्राप्त हो पाएंगे। सरकार के कामों में सहयोग करने की स्थितियां कम बनेंगी।

चंद्र रत्न आपके सम्मान और पद प्रतिष्ठा को प्रभावित कर सकता है। आप को समाज में घुल मिल जाने में समय लग सकता है। व्यापार के माध्यम से आपके लाभों में कमी हो सकती है। आय क्षेत्रों में अत्यधिक दायित्वों के कारण आप अपने परिवार को प्रयाप्त समय नहीं दे पायेंगे। यह रत्न आपके मातृ सुख में कमी कर सकता है। इस रत्न को पहनने पर आपके लाभों में अस्थिरता की स्थिति बन सकती है।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में चंद्र सप्तम भाव के स्वामी है। सप्तमेश चंद्र का मोती रत्न धारण करने पर आपके जीवन की मुख्य क्रियाएं वैवाहिक जीवन के इर्द-गिर्द केन्द्रित हो सकती है। जीवन साथी के प्रति विशेष अनुग्रह के कारण आप अपने अन्य दायित्वों के निर्वाह में चूक सकते हैं। रत्न की शुभता का पूर्ण सहयोग प्राप्त न होने के कारण आपका ग्रहस्थ सुख आंशिक रूप से कष्टपूर्ण हो सकता है। मोती रत्न आपको साझेदारी व्यापार में अनियमितता दे सकता है। मोती रत्न आपकी प्रसन्नता, सदबुद्धि तथा यश सम्मान में कमी कर सकता है। यह रत्न आपकी विदेश यात्राओं में बाधक का कार्य कर सकता है। आप भ्रमणशील हो सकते हैं। साथ ही यह रत्न धन-धान्य में भी कमी कर सकता है।

### लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु छठे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया पहनने पर आपके रोग ठीक होने में समय अधिक ले सकते हैं। माता से मतभेद की स्थिति यह रत्न बना सकता है। नैनिहाल पक्ष से आदर सम्मान की प्राप्ति कम हो सकती है। यह रत्न आपका स्वभाव झगडालू बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप फिजूलखर्ची के आदी हो सकते हैं। आपको विवादों में सफलता पाने में कुछ अधिक समय लग सकता है। भूत-प्रेत जैसी बाधाओं से आपको कष्ट मिल सकते हैं। दांत का रोग अथवा होंठों से संबंधित कोई परेशानी हो सकती है। लहसुनिया रत्न रोगों को प्रभावी करेगा। ऋणों को बढ़ाएगा तथा शत्रुओं से कष्ट दे सकता है।

केतु मिथुन राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध सातवें भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न आपके वैवाहिक जीवन को कष्टमय बनाएगा। यह रत्न आपकी छवि व चरित्र को विवादास्पद बना सकता है। इस रत्न प्रतिकूलता से आपकी निष्ठा दांपत्य जीवन के प्रति कुछ कम होगी। रत्न प्रभाव से आपको उदर संबंधित रोग विशेषकर आंतों से जुड़े रोग हो सकते हैं। यह रत्न धारण करने पर आपके विवाह तय होने में भी विलम्ब की स्थितियां बन सकती है। यह रत्न आपको स्वतन्त्र व्यापार में हानि दिला सकता है तथा आपके लिए इस रत्न की शुभता के कारण प्रशासनिक एवं राजनैतिक जीवन में उतार-चढ़ाव के योग बन सकते हैं।

### माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको सत्ता पक्ष, सरकार या सरकारी कर्मचारियों के द्वारा अपमानित होना पड़ सकता है या इनके कारण हानि हो सकती है। रत्न प्रभाव से आपके पिता की बहन अर्थात बुआ के साथ आपके सम्बंध खराब रह सकते हैं। कभी-कभी आर्थिक स्थिति और पारिवारिक संबंधों को लेकर भी परेशानी उठानी पड़

सकती है। सूर्य रत्न माणिक्य आपको किसी बात को लेकर चिंतित रख सकता है। माणिक्य रत्न आपको आंशिक रूप से स्वाथी बना सकता है। रत्न शुभता आपको वैवाहिक जीवन में सामंजस्य बनाए रखने में प्रतिकूलता दे सकता है। ग्रहस्थ जीवन के लिए रत्न अनुकूलता आपके साथ नहीं है।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में सूर्य अष्टमेश है। अष्टमेश सूर्य का माणिक्य रत्न धारण करना आपके लिए प्रतिकूल सिद्ध हो सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर आपके स्वास्थ्य सुख में कमी हो सकती है। इस रत्न में शुभता की कमी के कारण आप पदोन्नति के लिए विशेष चातुर्य का प्रयोग करने का प्रयास कर सकते हैं। सरकारी क्षेत्रों से अपना काम निकलवाने के लिए भी आप अन्य स्रोतों का सहयोग लेने से पीछे नहीं हटेंगे। रत्न प्रभाव से आप अपनी अधिकारिक शक्तियों का आंशिक दुरुपयोग कर सकते हैं। रत्न की अनुकूलता आपके साथ नहीं है। इसलिए यह रत्न आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता है। यह रत्न आपको दीर्घकालीन रोग दे सकता है।

### पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपका स्वजनों से लगाव कुछ कम हो सकता है। यह रत्न पैतृक धन की हानि करा सकता है। पुखराज रत्न प्रभाव से आपकी आर्थिक उन्नति में बाधाएं आ सकती हैं। धन, आय और लाभ रुक रुक कर आगे बढ़ेंगे। यह रत्न आपको सुमार्ग से हटा सकता है। आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। कुल परंपराओं से आप हट सकते हैं। पुखराज रत्न आपको कंजूस और लालची भी बना सकता है। आपको अपनी योग्यता अनुसार कार्य न मिलने के योग भी बन रहे हैं। गैरधार्मिक विषयों पर आपके व्यय अधिक हो सकते हैं।

आपकी मकर लग्न के कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं द्वादशेश है। गुरु का रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पुखराज रत्न पहनने पर अनिद्रा रोग प्रभावी होकर आपके स्वास्थ्य में कमी कर सकते हैं। कार्यों को पूर्ण करने के लिए आपको अधिक प्रयास करने पड़ सकते हैं। जिसके कारण आपको आराम के अवसर कम मिलेंगे। यह भी आपको अस्वस्थ करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आप चिंता और अपमान से पीड़ित हो सकते हैं। मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को यह रत्न बाधित कर सकता है। पुखराज रत्न आपके विदेश भाव को प्रबल कर आपको व्यर्थ की यात्राएं दे सकता है। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आपको आर्थिक दंड के रूप में टैक्स (कर) देने पड़ सकते हैं।

### गोमेद

आपकी कुंडली में राहू द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू रत्न गोमेद धारण करना आपके मन में भ्रम दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपके सुख चैन में कमी हो सकती है। आपके दिमाग में अनेक भ्रान्तियां जन्म ले सकती हैं। उन्नतिशील होने के लिए आप अत्यधिक महत्वाकांक्षी हो सकते हैं। अनेक योजनाएं आपके मस्तिष्क में निर्मित हो सकती हैं। यह रत्न आपके दिमाग को अत्यधिक

क्रियाशील बनाए रखेगा। गोमेद रत्न प्रभाव से आप बढ़ चढ़ कर बातें करने वाले हो सकते हैं। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग दे सकता है। गोमेद रत्न आपको वैचारिक अस्थिरता दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपको पिता को सुख भी कम ही मिल पाएगा। कार्यों में अनिष्टता का भाव प्रभावी हो सकता है।

राहु धनु राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु आठवें भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरुसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

### दशानुसार रत्न विचार

#### बुध

(16/01/2011 - 16/01/2028)

बुध की दशा में आपका नीलम, पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, लहसुनिया, माणिक्य, पुखराज व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

#### केतु

(16/01/2028 - 16/01/2035)

केतु की दशा में आपका नीलम, मूंगा व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मोती, माणिक्य, पुखराज व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

**शुक्र**  
**(16/01/2035 - 16/01/2055)**

शुक्र की दशा में आपका नीलम, हीरा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और मोती, माणिक्य, पुखराज व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

**सूर्य**  
**(16/01/2055 - 16/01/2061)**

सूर्य की दशा में आपका नीलम व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, पुखराज, गोमेद व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

**चन्द्र**  
**(16/01/2061 - 16/01/2071)**

चन्द्र की दशा में आपका नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, पुखराज, गोमेद व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

**मंगल**  
**(16/01/2071 - 16/01/2078)**

मंगल की दशा में आपका नीलम व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, पन्ना व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, पुखराज व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

### **राहु** (16/01/2078 - 16/01/2096)

राहु की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, माणिक्य, पुखराज, गोमेद व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

### **गुरु** (16/01/2096 - 17/01/2112)

गुरु की दशा में आपका नीलम व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, माणिक्य, पुखराज व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - लापीज

आपका जन्म मकर राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह ज्योतिष शास्त्र में न्याय का प्रतीक व न्यायप्रिय माना जाता है तथा शनि को ज्योतिष में आध्यात्मिक ज्ञान के लिये शुभ माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मकर राशि के लग्न वाले जातकों को मकर राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये लापीज रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शनि न्यायप्रिय एवं नौकरी का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को समाज में सम्मान तथा नौकरी पेशा लोगों के लिये अपने वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग व सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को घर के बुजुर्गों तथा सेवकों का सहयोग भी प्राप्त होता है। शनि ग्रह एकाग्रता तथा आत्मिक शक्ति का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जिसको कोर्ट कचहरी मुकदमे आदि से संबंधित परेशानी हों उनको यह रत्न अल्प प्रयास से समस्याओं से मुक्ति दिलवाता है।

लापीज रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। लापीज रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल सूर्यास्त के पश्चात होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त से एक घंटे के समय के अंदर इसको धारण करना होता है। लापीज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ. भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

लापीज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ॐ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सरसों का तेल, सवा मीटर काले कपड़े का दान करें तो लापीज रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और शनि देव की उपासना करें तो यह लापीज रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव जी की उपासना करें तथा शनिदेव जी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

मकर लग्न वाले जातक यदि लापीज रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



## रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

### आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मकर लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई पड़ता है। आप मेहनती हैं, इसलिए बिना रुके निरन्तर कार्य करते रहते हैं, जिस कारण इनके किये हुए कार्यों में गलतियों की संभावना कम रहती है। आप दृढ़ निश्चयी और संयमी हैं। जीवन से आने वाली बाधाओं से घबराते नहीं हैं, बल्कि उनका डटकर मुकाबला करते हैं। दूसरों की मदद करने की प्रवृत्ति रखते हैं। साथ ही आप हंसमुख हैं। आप में व्यय अधिक करने का स्वभाव हो सकता है। दूसरों की मदद करने वाले होते हैं। आप हंसमुख हैं। आप कम समय में किसी भी परिस्थिति में अपने का ढालने में दक्ष होते हैं।

आप गलत बातें सहन नहीं कर पाते चाहे उस विरोध में अकेले ही रह जाये। आप

अपनी समझदारी और सूझ-बूझ का परिचय देते हुए बड़ी ही आसानी से अपना कार्य करवा लेते हैं। हर विषय में आपकी रुचि रहती है और हर क्षेत्र में सफलता पाना चाहे हैं और अपनी मेहनत और लगन से सफलता हासिल कर भी लेते हैं। आप न्याय है और कभी किसी के साथ धोखा नहीं करते। असफलता मिलने पर आप शीघ्र निराश हो जाते हैं। व्यर्थ की बातें करने में अपना वक्त व्यय नहीं करते और अपने भविष्यके बारे में सोचते हैं। आप परोपकारी है और अनुशासन पसंद हैं। अपने सिद्धांतों पर जीते हैं। आप परोपकारी हैं।

कुंडली के सभी 12 भाव सदैव शुभ फल नहीं देते। 12 भावों में से 6, 8 व 12 वां भाव जिन्हें त्रिक भाव के नाम से भी जाना जाता है। इन भावों के भावेश तथा इन भावों में स्थित ग्रह अशुभ होने के कारण अशुभ फल देते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते है। कुंडली के षष्ठ भाव को रोग, ऋण और शत्रु भाव की संज्ञा की जाती हैं। छोटी अवधि के रोग भी इसी भाव से देखे जाते हैं। तथा अष्टम भाव मृत्यु, दुर्घटना, कलेश, विघ्न और अकाल मृत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। अष्टमेश का किसी भी भाव-भावेश से सम्बन्ध बनना अनुकूल नहीं माना जाता है। 6 व 8 भावों के बाद एक अन्य व अंतिम त्रिक भाव 12 वां भाव है। 12 वें भाव से व्यय, सरकारी दंड, लम्बी अवधि का कारावास, शयन, मोक्ष, टैक्स तथा विदेश स्थान का विचार किया जाता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

बुध आपके षष्ठेश व नवमेश है, आपका पारिवारिक जीवन कष्टकारी हो सकता है। व्यापारिक विषयों में भी हानि के योग बन सकते हैं। इसके अलावा यह आपको शत्रुओं के द्वारा धन-हानि की संभावनाएं दे सकता है। यह योग पिता के स्वास्थ्य के पक्ष से भी शुभ नहीं है। सूर्य अष्टमेश गुरु द्वादशेश तथा तृतीयेश हैं।

आपकी कुंडली के छठे भाव में केतु स्थित हैं, आप अपने शत्रुओं पर हावी रहेंगे, वात सम्बन्धी रोग शीघ्र अपने प्रभाव में ले सकते हैं, भूत-प्रेत बाधा से पीड़ित हो सकते हैं, अत्यधिक बोलने वाले, तथा ननिहाल पक्ष से अपमानित हो सकते हैं। आप अल्पकालीन रोगों से पीड़ित हो सकते है।

गुरु का अष्टम भाव में स्थित होने से पैतृक संपत्ति का नाश हो सकता है। बुद्धि विवेक से धनार्जन करने में सफल, माता के सहयोग से भाग्योन्नति, उन्नति में विलम्ब, कारावास संभव। आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा। संघर्षों के उपरान्त आपको कार्यों में सफलता, धन और यश की प्राप्ति होगी। व्यय शुभ कार्यों पर होंगे। धन, कुटुंब और विद्या से सुख की प्राप्ति होगी। माता, घर, जमीन -जायदाद और वाहन सुख दे रहे हैं।

शुक्र अष्टम भाव में विवाह के उपरान्त भाग्योन्नति, सामान्य धनी, जीवन साथी द्वारा धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करता है। शुक्र अष्टम भाव में प्रेम सम्बन्धों में बाधाएं, जन्म

स्थान से दूर निवास, परस्त्रीरत बना सकता है।

राहु आपके द्वादश भाव में स्थित है, राहु की यह स्थिति आपको अवनति का कारण बन सकती है, आप शत्रुहंता बनेंगे। आप नीच प्रवृत्तियुक्त, कपटी, कुटिल, नेत्ररोगी, असत्यभाषी, दुराचारी, पत्नी की चिंता से ग्रस्त, दुष्ट संगती में धन का अपव्यय करने वाला हो सकते हैं। धानार्जन तथा व्यय दोनों ही अधिक होते हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 5, 6, 8, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996
अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020 -----

### द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049 -----

### तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079 -----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	धन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	अल्प बचत
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	कम खर्च

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपके जन्म काल में मंगल की स्थिति चन्द्रकुंडली में सप्तम भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं परन्तु शास्त्रानुसार आपके मंगल का दोष समाप्त हो जाता है। अतः ऐसे मंगल से आपको शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगा। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में थोड़ी उग्रता अवश्य हो सकती है। मंगल के शुभ प्रभाव से आप जीवन में समस्त प्रकार से सुखेश्वर्य एवं धन धान्य को अर्जित करेंगे तथा सुख पूर्वक जीवन में इनका उपभोग करेंगे।

इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है परन्तु विवाह में कोई विशेष बाधाएं या समस्याएं उत्पन्न नहीं होंगी। शान्ति पूर्वक आप का विवाह कार्य सम्पन्न होगा। आप दोनों का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। विवाह के पश्चात दाम्पत्य जीवन आनंद पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आपके परस्पर भी सामान्यतया मधुर एवं प्रगाढ़ रहेंगे।

आपकी चन्द्र कुंडली में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः इसके प्रभाव से आप सुयोग्य जीवन साथी प्राप्त करने में सफल रहेंगे। परस्पर अत्यंत ही प्रेम एवं सहयोग का भाव रहेगा जिससे आपका दाम्पत्य जीवन पूर्ण रूप से शांत तथा सुखी रहेगा। इस मंगल की दशम भाव पर दृष्टि होने से आप किसी उच्च पद को प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा समाज में पूर्ण मान सम्मान तथा ख्याति भी अर्जित करेंगे। आपके कार्य क्षेत्र में सर्वदा यथोचित उन्नति होती रहेगी। प्रथम भाव पर मंगल की दृष्टि से शारीरिक स्वास्थ्य तो अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव विद्यमान होगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आप पारिवारिक सुख से सर्वदा युक्त रहेंगे सामान्यतया शान्ति पूर्वक परिवार का पालन करेंगे। विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी आप सफल रहेंगे तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करने में भी आप समर्थ होंगे। इस प्रकार आपका जीवन पूर्ण शान्ति तथा सुख से व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक या ऐसी मंगली कन्या से विवाह करना चाहिए जिसकी चन्द्रकुंडली में मंगल का दोष उचित नियमानुसार भंग हो रहा हो ऐसा उचित मिलान होने पर आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति तथा सफलता अर्जित करेंगे। एक सौभाग्यशाली पुरुष होकर जीवन में धन धान्य एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे। जीवन में आपको किसी भी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव नहीं रहेगा। सभी भौतिक सुखों का आप आनंद पूर्वक उपभोग करेंगे।

इसके अतिरिक्त जिस कन्या की चन्द्रकुंडली में सप्तम भाव में ही मंगल हो उस कन्या से यदि आवश्यक हो तभी विवाह करना चाहिए अन्यथा यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए। क्योंकि समान भाव में स्थित मंगल जीवन साथी के लिए विशेष शुभ नहीं होता तथा दाम्पत्य जीवन में शारीरिक तथा अन्य प्रकार से अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी जिससे आपका सुखी दाम्पत्य जीवन प्रभावित होगा। इसके अतिरिक्त अन्य भावों में यदि मंगल स्थित हो तो वह शुभ फल प्रदान करेगा तथा दाम्पत्य जीवन में किसी भी प्रकार से अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न नहीं होंगी अतः अच्छी तरह सोच विचार कर अन्तिम निर्णय लेना चाहिए जिससे भविष्य में किसी भी प्रकार से परेशानी या असुविधा उत्पन्न न हो।

## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध और शुक्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

**नोट :**

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## ग्रह फल

### सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

### चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वाला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक

दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

### मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं कूर होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

### बुध

सातवें भाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

### गुरु

अष्टम भाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

## शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

## शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

## राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

## केतु

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

## स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया इस लग्न में उत्पन्न जातक शांत एवं उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं तथा अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। ये विचारशीलता एवं गंभीरता के भाव से युक्त रहते हैं तथा अत्यंत ही परिश्रमी एवं कार्यशील होते हैं फलतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। इनमें कार्य करने की क्षमता अद्वितीय होती है तथा यही गुण जीवन में इनकी सफलता का रहस्य होता है। इनमें सेवा परायणता का भाव भी रहता है तथा देश एवं समाज सेवा के कार्यों में प्रवृत्त रहते हैं। ये साहसी एवं निर्भीक होते हैं तथापि मन में यदा कदा उदासीनता की भावना विद्यमान रहती है जिससे सुख में खुशी तथा दुःख में कष्ट की अनुभूति कम होती है। भौतिकता के प्रति इनका आकर्षण कम ही रहता है तथा सादा एवं त्यागमय जीवन व्यतीत करने के ये इच्छुक रहते हैं। इसके अतिरिक्त स्वपरिश्रम के द्वारा ये अनुसन्धान, विज्ञान एवं शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में समाज में आदरणीय रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप एक स्वस्थ एवं बलवान व्यक्ति होंगे आपमें आदर्शवादिता का भाव भी होगा तथा अपने आदर्शों पर स्वतंत्र रूप से विचार करेंगे। साथ ही आपके उच्चादर्शों से अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। दार्शनिकता के भाव से भी आप युक्त होंगे तथा शत्रु एवं प्रतिद्विन्दियों के प्रति आपके मन में उदारता का भाव रहेगा फलतः वे भी आपसे प्रभावित होंगे। अतः सदगुणों से सभी लोगों के मध्य आप आदरणीय रहेंगे।

लग्न में शनि की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से शांति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे फलतः आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की छाप रहेगी। कार्य क्षेत्र में भी आपका प्रभाव रहेगा तथा आपकी कर्तव्य परायणता तथा परिश्रम से उच्चाधिकारी वर्ग या सहयोगी सन्तुष्ट होंगे। फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा तथा परस्पर सम्बन्धों में मधुरता रहेगी। उत्तम कार्यों को करने में भी आप रुचिशील होंगे फलतः समाज में एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में आपकी छवि रहेगी।

स्वव्यवसाय के प्रति आपकी इच्छा होगी तथा इसको सम्पन्न करके इसमें आपको इच्छित लाभ एवं उन्नति मिलेगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी उत्तम रहेगी जिससे धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होंगे। साथ ही सुख संसाधनों से भी सुसम्पन्न रहेंगे तथा अपने कार्यों से समाज में प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करेंगे। इससे लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे परन्तु यदा कदा आप कृपणता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे।

धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा होगी परन्तु धार्मिक कार्य कलाप अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे वांछित लाभ एवं सहयोग अवसरानुकूल प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार आप शांत उदार परिश्रमी एवं

पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।



## धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा बुराइयों के प्रति हमेशा सजग रहेंगे। साथ ही आप एक स्पष्ट वक्ता होंगे तथा जो कुछ भी मन में हो स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कह देंगे। आपकी प्रवृत्ति निस्वार्थी रहेगी तथा इसी भाव से आपके सांसारिक कार्य कलाप सम्पन्न होंगे परन्तु अन्य जनों की बातों से आप शीघ्र ही सहमत हो जाएंगे इससे यदा कदा अनावश्यक परेशानियां भी हो सकती हैं। आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति होंगे तथा परिवार के प्रति आपका अत्यधिक लगाव रहेगा। साथ ही घर को भी आप हमेशा सुन्दर तथा आकर्षक रूप से देखना पंसद करेंगे।

आप परिवार के ओर से सर्वदा चिन्तित रहेंगे तथा मानसिक एवं भावनात्मक रूप से पारिवारिक सदस्यों से जुड़े रहेंगे। आप किसी भी चीज को शान्ति पूर्वक ग्रहण करेंगे तथा अनावश्यक चंचलता के भाव की आप में न्यूनता रहेगी। आपकी वाणी मधुर रहेगी तथा अन्य लोग वाणी से पूर्ण प्रभावित रहेंगे तथा आप स्पष्ट रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्त करेंगे। आपको विभिन्न स्वादों का आस्वादन करना प्रिय लगेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा पारिवारिक जनों के साथ धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करते रहेंगे इसके अतिरिक्त किसी धनवान व्यक्ति के सहयोग से आप इच्छित धनार्जन करेंगे तथा सज्जनों एवं महात्माओं का आदर सत्कार करते रहेंगे। साथ ही अवसरानुकूल परोपकार संबंधी कार्यों को भी आप सम्पन्न करते रहेंगे।

## शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। आप सांसारिक सुखों को अर्जित करने में समर्थ होंगे तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त होंगे। लेकिन सुखों को प्राप्त करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा यदा कदा इनमें विलम्ब भी होगा। लेकिन आप परिश्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति हैं। अतः इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा अपनी बुद्धिमता से आप सुख संसाधनों को अर्जित करने में तत्पर होंगे।

जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होगा तथा किसी वृद्ध व्यक्ति की चल एवं अचल सम्पत्ति भी आपको मिल सकती है। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा समय समय पर धन स्वपराक्रम एवं परिश्रम से धन सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। लेकिन विवादित सम्पत्ति से आपको कोई भी संबंध स्थापित नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ के भी योग बनेंगे।

आपका आवास स्थान मध्यम होगा परंतु आवश्यक सुख-सुविधाओं से भी सुसज्जित होगा। घर को स्वच्छ एवं आकर्षक बनाए रखने के लिए आप व्यक्तिगत रूप से इच्छुक होंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सामान्य ही होंगे तथा संबंधों में औपचारिकता होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी मध्यम होगा परंतु मध्यावस्था में इसमें अनुकूलता आएगी।

आपकी माता जी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं भौतिकतवादी विचारों की महिला होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता से परिवार के सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे परंतु आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में यदा कदा तनाव उत्पन्न हो सकता है।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा छोटी कक्षाओं से आप स्वपरिश्रम से कुछ अच्छी सफलता प्राप्त करने में समर्थ होंगे परंतु स्नातक परीक्षा में आपको काफी परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा तभी वांछित सफलता मिल सकती है। यदि आप स्नातक परीक्षा की बजाय किसी तकनीकी पाठ्यक्रम का अध्ययन करें तो इसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता मिलेगी तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी।

## प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। तथा मंगल भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक ही अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे तथा उनमें समयानुसार वांछित लाभ एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप में शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की क्षमता होगी तथा कठिन समस्याओं का शीघ्र एवं सही समाधान करने में समर्थ होंगे जिससे अन्य सामाजिक लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा वांछित आदर प्रदान करेंगे। मंगल की पंचमभावास्थ स्थिति के प्रभाव से वैदिक, साहित्य, दर्शन एवं धर्म में आपकी रुचि कम ही होगी परन्तु आधुनिक साहित्य, भौतिक विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र के ज्ञानार्जन में आप नित्य तत्पर होंगे तथा स्वपरिश्रम से वांछित ज्ञान अर्जित करके समाज में अपना प्रभाव स्थापित करेंगे तथा आदरणीय माने जायेंगे।

मंगल का शुक्र की राशि में स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आप विशेष रुचिशील होंगे तथा इनसे आपको मानसिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी। आपके प्रेम में भावानात्मक आकर्षण विद्यमान होगा परन्तु भावुकता से आप कम ही कार्य लेंगे। आपको प्रेम प्रसंगों में मर्यादा एवं नैतिकता का ध्यान रखना चाहिए अन्यथा आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है एवं आपकी सामाजिक छवि प्रभावित हो सकती है। अतः ऐसी स्थितियों की उपेक्षा ही करनी चाहिए।

संतति भाव में मंगल की स्थिति के प्रभाव से आपको संतति प्राप्त में विलम्ब होगा परन्तु संतति अवश्य होगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी, स्वतन्त्र प्रवृत्ति एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति तथा सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति यद्यपि उनके मन में पूर्ण आदर तथा सम्मान का भाव होगा परन्तु स्वतन्त्र प्रवृत्ति होने के कारण वे अपनी इच्छा के अनुसार ही कार्यो को सम्पन्न करेंगे तथा माता-पिता तथा अन्य श्रेष्ठ जनो की सलाह कम ही लेंगे। यदा-कदा वे अपने स्वार्थ के कारण माता-पिता की आज्ञा का भी उल्लंघन कर सकते हैं। लेकिन उनकी ओर से आपको अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य करने देने चाहिए। इससे परस्पर सम्बन्धों में मधुरता बनी रहेगी तथा विश्वास का भाव भी बना रहेगा इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चों से आपको विशेष अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए तथा यथोचित मात्रा में धन संग्रह करके रखना चाहिए जिससे अनावश्यक परेशानियों का सामना न करना पड़े।

अध्ययन के क्षेत्र में आपके बच्चे बुद्धिमान एवं परिश्रमी होंगे तथा शिक्षा के क्षेत्र में संतोषजनक प्रगति करने में समर्थ होंगे। आप भी उनकी शिक्षा किसी मान्यता प्राप्त आधुनिक संस्था में करवाएंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। आपकी संतति तेजस्वी, पराक्रमी एवं व्यवहार कुशल होगी तथा अन्य सामाजिक जनो को अपने इन गुणों से प्रसन्न तथा प्रभावित करने में समर्थ होगी परन्तु यदा-कदा अन्य जनो से उनका विवाद भी हो सकता है। इस प्रकार संतति सुख आपके लिए मध्यम ही होगा परन्तु बच्चे प्रगतिशील होंगे।

## परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है तथा बुध भी सप्तम भाव में ही स्थित है। सामान्यतया कर्क राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील चंचल बुद्धिमान एवं धनाढ्य होता है तथा बुध के प्रभाव से वह कला एवं संगीत प्रेमी सांसारिक कार्यों में चतुर तथा कर्तव्य परायण होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा अपने सांसारिक कार्यों को करने में चतुर होंगी उनकी बुद्धिमता से सभी लोग प्रभावित होंगे। चन्द्रमा के प्रभाव से सुंदरता के प्रति उनका आकर्षण रहेगा तथा कला के प्रति भी रुचिशील होंगी बुध के प्रभाव से वह एक कर्तव्य परायण महिला होंगी तथा समाज एवं परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगी। इससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपकी पत्नी सुंदर आकर्षक एवं गौर वर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा शारीरिक संरचना उनकी आकर्षक एवं पतली होगी। शरीर के अन्य अंग पुष्ट एवं सुडौलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य में निखार तथा व्यक्तित्व में आकर्षण में वृद्धि होगी। सौन्दर्य में वृद्धि के लिए वह आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का भी प्रयोग करेंगी। वह कला एवं संगीत प्रिय होंगी तथा उनका अधिकांश समय इसी पर व्यतीत होगा।

सप्तम भाव में बुध के प्रभाव से आपका विवाह विज्ञापन या संबंधियों के सहयोग से सम्पन्न होगा। साथ ही प्रेम विवाह की भी संभावना रहेगी। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा एवं एक दूसरे के प्रति मन में प्रबल आकर्षण तथा प्रेम का भाव होगा। आप दोनों शिक्षित व्यक्ति होंगे अतः दोनों के जीवन के मूल्यों एवं सिद्धांतों में समानता रहेगी। सांसारिक महत्व के कार्यों को आपसी सहमति एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे। इससे संबंधों में मधुरता रहेगी एवं विश्वसनीयता भी बनी रहेगी।

आपका विवाह किसी सम्पन्न एवं समृद्ध परिवार से होगा तथा विवाह में दहेज के रूप में प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे नैतिक एवं आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी वे आपको यथोचित स्नेह तथा महत्व देंगे एवं आप भी हृदय से उनका सम्मान करेंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा एवं श्रद्धा का भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। देवर एवं ननद भी उनके सद्व्यवहार एवं मधुरवाणी से प्रभावित होंगे तथा उन्हें यथोचित सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगे। इससे परिवार में शांति बनी रहेगी।

व्यापार या किसी महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी रहेगी एवं इससे लाभ होगा यदि किसी संबंधी से साझेदारी कि जाए तो इससे आपकी इच्छित उन्नति होगी एवं आपस में विश्वसनीयता का भाव भी बना रहेगा।

## व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। तुला राशि वायुतत्व युक्त राशि है अतः उसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही इसमें आप समय समय पर परिवर्तन भी करते रहेंगे तथा ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आपको लाभ भी होगा तथापि अधिक परिवर्तनशीलता की आपको उपेक्षा करनी चाहिए।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र कला संगीत, सिनेमा, नाटक, दूरदर्शन विभाग, इलैक्ट्रॉनिक्स, फिल्म निर्देशन, कम्प्यूटर, एयर लाइंस आदि विभाग शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इनमें कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा आपका भविष्य उज्ज्वल रहेगा। साथ ही उन्नति में अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का भी सामना नहीं करना पड़ेगा अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त विभागों में ही कार्य का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए सोना, चांदी, हीरा आदि धातु एवं रत्नकार्य, चतुष्पद या वाहन संबंधी क्रय विक्रय, सौन्दर्य प्रसाधन एवं आलंकारिक वस्तुओं का व्यापार, रेशमी या मूल्यवान वस्त्रों का व्यापार या आयात निर्यात, कीमती मदिरा, इलैक्ट्रॉनिक्स या कम्प्यूटर कनसलटेंसी एवं फिल्म निर्माण आदि के कार्य में भी आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ भी अर्जित होगा। अतः उपरोक्त वस्तुओं या क्षेत्रों में ही व्यापार का प्रारंभ करें।

जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। साथ ही समाज में भी आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आप किसी सामाजिक या सांस्कृतिक संस्था के सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी हो सकते हैं एवं क्लबों आदि में भी आप आदर की दृष्टि से देखे जाएंगे। अतः अपनी उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

आपके पिता शिक्षित बुद्धिमान प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करेंगे जिससे उन्हें सामाजिक सम्मान की प्राप्ति होगी। आपकी उच्च शिक्षा के प्रति वे पूर्ण जागृत होंगे तथा इसका उच्चस्तर पर प्रबंध करके आपको योग्य व्यक्ति बनाएं। साथ ही आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशिष्ट योगदान होगा। आप भी स्वपरिश्रम एवं योग्यता से प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता होगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त सांसारिक महत्व के कार्यों को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

## वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें लग्न स्थान में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु छठे भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। आप अपने कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधिमें आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको सफलता मिलेगी। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जायेगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की संभावना बनी रहेगी। द्वितीयस्थराहु के प्रभाव से धन संचित करने में बाधा उत्पन्न होगी और धनागम के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। आपको अपने अनावश्यक खर्चों पर अंकुश लगाना चाहिए। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

02 जून के बाद आपके धनागम के स्रोत खुलेंगे जिससे आप की आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी होगी। परिवार में मांगलिक कार्यों में पैसा खर्च हो सकता है। आपको मित्र या जीवनसाथी के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है अतः उस समय कोई बड़ा निवेश न करें।

### घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान के राहु आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं जिससे आपका परिवारिक माहौल खराब हो सकता है। आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। छठे स्थान केगुरु आपके मातुल पक्ष के साथ आपके संबंध खराब कर सकते हैं।

02 जून के बाद जीवनसाथी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप

अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। तृतीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

### संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। उसका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

02 जूनके बाद आपके बच्चे के लिए समय अच्छा हो रहा है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुछोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियां भी हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

02 जून के बाद का समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए अनुकूल है। यदि कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

### यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

तृतीयस्थ शनि आपकी छोटी-मोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिएवर्ष के पूर्वार्द्ध में मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ मे नहीं लगेगापरन्तु 02 जूनसे गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने

जीवनसाथी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।



## वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं तृतीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष लग्न स्थान में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। अपने भाई या किसी के साथ मिलकर व्यापार कर सकते हैं, अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। नौकरी करने वालों के लिए समय सामान्य रहेगा।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है अतः कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ धनार्जन करेंगे। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पत्नी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

जून के बाद गुरु एवं शनि दोनों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए यह समय उपयुक्त नहीं है अतः कोई निवेश न करें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर अनुकूल हो रहा है। उस समय आप बहुत अच्छी बचत कर सकते हैं।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष ठीक-ठाक रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपका पत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। अविवाहित जातकों का विवाह संस्कार होसकता है। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगी जिससे विरोधाभास व वैमनस्य की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकता है। माता-पिताका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा।

### संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा है। यदि आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा।

26 जून के बाद आपको संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उनको सफलता प्राप्त के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है। 26 नवम्बर के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। लग्न स्थान का राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं परन्तु लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि से आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपको खान-पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या भी सुव्यवस्थित रखनी चाहिए। सुबह सुबह टहलना भी आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

जून के बाद स्वास्थ्य के लिहाज से समय अच्छा नहीं रहेगा। शनि, राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कोई लम्बी बीमारी होने के संकेत मिल रहे हैं। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय आपके लिए ज्यादा मुश्किल भरा हो सकता है। अष्टमस्थ गुरु जल तत्त्वाशि में होने कारण आप कफ, पाचन व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में स्वास्थ्य संबंधित लापरवाही आपके लिए खतरा उत्पन्न कर सकती है। 26 नवम्बर के बाद नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आप परिश्रम के बल पर प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के लिए अच्छा है।

जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको परिश्रम का फल नहीं मिलेगा, जिससे आपके करियर में सफलता की उम्मीद कम ही लग रही है। उच्च शिक्षा

प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए 26 नवम्बर के बाद समय अच्छा हो रहा है।

### यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ शनि की नवम भाव पर दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। पत्नी के साथ हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। जून के बाद अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को अर्घ्य दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या लोहे के तवे का दान करें।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और व्रत रखें।

## वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु नवम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा परन्तु फरवरी से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन रही है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की चेष्टा करेंगे। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से कार्य व्यवसाय में कुछ सुधार होगा। कार्य-कुशलता एवं दक्षता के बल पर आप अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा।

### धन संपत्ति

सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके संचित धन में कमी आ सकती है। आय के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं।

राहु के गोचर के बाद कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कुछ कमजोर हो सकती है। 24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

### घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान का शनि छोटे भाई-बहनों के लिए बहुत अच्छा है और उनकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेगा। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। आपके बच्चों के विवाह की संभावना भी बन रही है। फरवरी के बाद आपके माता पिता के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

24 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान का शनि आपके पारिवारिक माहौल को खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी जिसके कारण आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है।

## संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपको बच्चों के बारे में शुभ समाचार मिलेंगे। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे।

सन्तान इच्छुक जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। वह अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कठिनाई महसूस करेगा।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा नहीं होता। अपने स्वास्थ्य को लेकर हमेशा सचेत रहना चाहिए क्योंकि राहु अचानक ही शारीरिक परेशानी देते हैं। खान-पान के साथ अपनी दिनचर्या को भी सुधारें।

24 मई के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको करियर में सफलता पाने के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की पढ़ाई के प्रति रूचि बनी रहेगी परन्तु पढ़ाई में व्यवधान भी बना रहेगा।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या सॉफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

## यात्रा-तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी प्राप्त होगा। फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। 26 जून के बाद आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा परन्तु फरवरी के बाद मानसिक अस्थिरता के कारण पूजा-पाठ में मन कम ही लगेगा। 24 जुलाई के बाद पंचम भाव

पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।



## वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्षारम्भ में दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका सहयोग करेंगे। 29 मार्च के बाद भाग्य आपके अनुकूल हो रहा है। आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है। द्वादशस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में गुप्त शत्रु विघ्न उत्पन्न कर सकते हैं जिसके कारण आप कुछ परेशान हो सकते हैं परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजयी प्राप्त कर लेंगे और आपके कार्यों पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ परेशानी आ सकती है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो साझेदार के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में बुद्धिमानी से काम लें। 05 अक्टूबर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

### धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक रूप से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। द्वादशस्थ राहु के कारण अचानक कुछ अनावश्यक खर्च भी आ सकते हैं। 29 मार्च के बाद अपने बच्चों की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे।

25 अगस्त से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

### घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के

संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

25 अगस्त से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। माता पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

### संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु मार्च के बाद बहुत अच्छा हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। शिक्षा-दीक्षा के प्रति इनकी रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है।

08 अगस्त के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण मानसिक परेशानी बनी रहेगी। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह की दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता व सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

25 अगस्त से अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है या मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं। सुबह सूर्योदय के पहले उठकर घूमना या व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। आपको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। 29 मार्च के बाद विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों को करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। अतः आप अपने पूर्ण मन से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।

### यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होंगी। 29 मार्च के बाद छोटी यात्राएं होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल व उन्नति कारक सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद आप पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। अपने जन्म स्थल से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शान्ति

वर्ष के प्रारम्भ में घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा-पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं समाज में ख्याति प्राप्त होगी। 25 अगस्त से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

## वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

प्रथम तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आपके लिए श्रेष्ठतम रहेगा। जो आप चाहते हैं उसे पाकर ही रहते हैं यही बात आपको सफलता के द्वार पर ला खड़ा कर सकती है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे। मई के बाद आपको वेतन वृद्धि या पदोन्नति के रूप में आर्थिक लाभ भी होगा। जो व्यक्ति नौकरी में परिवर्तन चाहते हैं उनके लिए मई का महीना बहुत अच्छा रहेगा।

23 सितम्बर के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। आपकी आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

### धन संपत्ति

वर्ष का प्रथम माह छोड़ दिया जाए तो पूरे साल आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे और इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। मई के बाद रत्न आभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। आप कागजी कार्यवाही या फिर किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। नई योजना बनाने के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

23 सितम्बर के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय के नये साधन मिलेंगे। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

### घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। शनि ग्रह के गोचर के बाद घरेलू वातावरण के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाएंगे। आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

23 सितम्बर के बाद सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। समाज में पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

### संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपकी सन्तान की शिक्षा-दीक्षा में सुधार व पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से उन्नति भी होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरा बच्चा विवाह योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है।

शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का शनि गर्भवती स्त्रियों के लिए अच्छा नहीं है। संतान के साथ भावनात्मक लगाव में कमी आ सकती है। संतान के साथ वैचारिक मतभेद बना रहेगा।

### स्वास्थ्य

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय रहेंगे। आप दृढ़ निश्चयी और सशक्त इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति हैं जिसके कारण आप स्वस्थ रहेंगे। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

17 अप्रैल के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके लिए समय कुछ तनावपूर्ण हो सकता है। अपनी चिंता और व्याकुलता विजय पाने के लिए आप ध्यान या योग का सहारा ले सकते हैं। 23 सितम्बर के बाद गुरु का गोचर ईर्ष्या, प्रतिशोध और विश्वासघात जैसी बुरी भावनाओं को खत्म कर आपके अन्दर सकारात्मकता प्रदान करेगा जिससे आपको शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोत का सृजन करेंगे।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

### यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी। आपकी छोटी-छोटी यात्राएं होती ही रहेंगी साथ ही सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यावसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी। इन सब यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पारिवारिक प्रतिकूलता के कारण धार्मिक कार्यों में आपका मन नहीं लगेगा जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। 17 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा।

- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच या दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- काली वस्तु का दान करें या शनि मन्त्र का पाठ आपके लिए लाभप्रद रहेगा।



## दशा विश्लेषण

**महादशा :- बुध  
( 16/01/2011 - 16/01/2028 )**

बुध की महादशा 16/01/2011 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 16/01/2028 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध सप्तम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि प्रथम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के फलस्वरूप आपकी यात्रा, शक्ति में वृद्धि, सम्पत्ति की प्राप्ति तथा सम्बन्धियों से सहायता मिली होगी। बुध की इस दशा में आपकी जीवन वृद्धि में उन्नति, साझेदार से लाभ और व्यवसाय-व्यापार में सफलता मिलेगी।

**स्वास्थ्य :**

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपका स्वास्थ्य तथा जीवन शक्ति उत्तम रहेगी। फिर भी मौसम में परिवर्तन के कारण आपको ज्वर, संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, स्नायविक समस्या, उदर रोग आदि हो सकता है। आपमें वायु, पित्त तथा कफ तीनों दोषों का मिश्रण है, अतः आपके लिए सामान्य उपचार आवश्यक है।

**अर्थ और व्यवसाय :**

आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जीवन साथी तथा साझेदार से भी लाभ मिल सकता है। सट्टे में पर्याप्त लाभ हो सकता है। विदेश से व्यापार लाभदायक हो सकता है। जीविका के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर और हस्तनिर्मित वस्तु का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ मिलेगा और आय तथा सम्मान में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में स्थिति आपके अनुकूल होगी तथा सफलता और पदोन्नति प्राप्त होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोग अच्छा करेंगे। समाज में आपकी छवि उत्तम होगी, व्यापार में विस्तार और आय में वृद्धि होगी। कार्य के सिलसिले में आप यात्रा पर जा सकते हैं। जीवन में प्रगति के लिए यह दशा उत्तम है।

**वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :**

गुरु की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी तथा वाहन का सुख भी मिलेगा। शनि की अन्तर्दशा में आपकी छोटी लाभदायक यात्रा तथा मंगल की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी।

**शिक्षा :**

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप प्रतियोगिताओं तथा परिचर्चा में अच्छा करेंगे और आपकी वाक्पटुता उत्तम होगी। आप समूह-परिचर्चा तथा ऐसी अन्य गतिविधियों में अच्छा करेंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता तथा समाचार माध्यम और जनसंचार में आपकी रुचि होगी। अन्य प्रतिभाशाली, कूटनीति और बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है। आपका मस्तिष्क विवेकपूर्ण और विश्लेषणात्मक है और

आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

बच्चों के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे। आपके जीवन साथी को सफलता, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और जीवन-वृत्ति में उन्नति होगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपकी माता को जमीन-जायदाद सुख और मित्रों की संख्या में वृद्धि होगी जबकि आपके पिता को सफलता और लाभ मिलेगा तथा मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहन को सट्टे में लाभ तथा सुख की प्राप्ति और शिक्षा उत्तम होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। इस दशा के दौरान आपकी यात्रा होगी, सफलता मिलेगी और अध्यात्म की ओर झुकाव होगा।

अन्तर्दशा :

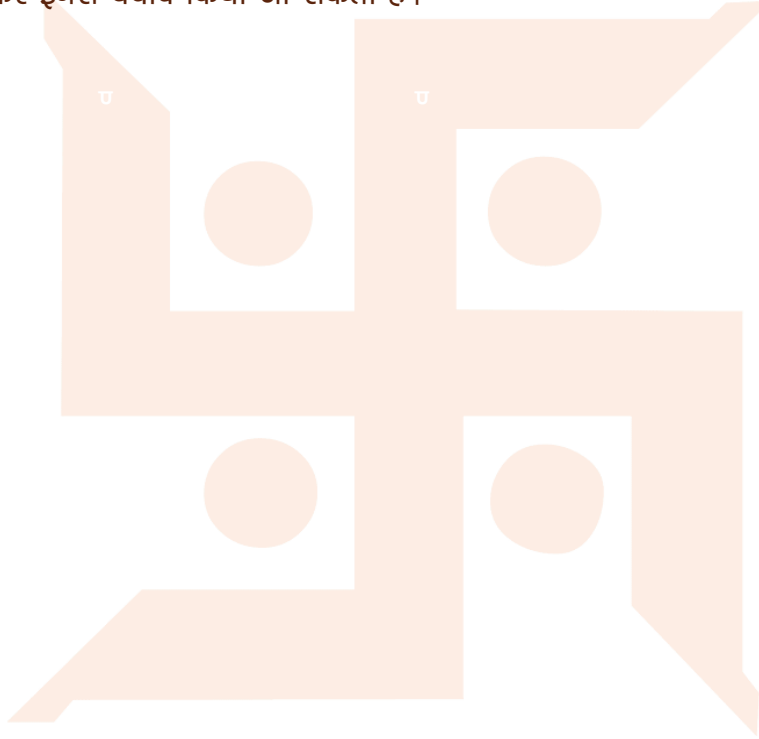
बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका विवाह होगा, माता-पिता से लाभ मिलेगा और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में आपको कुछ लाभ और कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है। सूर्य की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि चन्द्र दशा में कुछ परिवर्तन और अचानक लाभ हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा में बच्चों से सुख और सट्टे में लाभ मिलेगा। राहु के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख, यश और ख्याति मिलेगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और लाभ हो सकता है।

**महादशा :- केतु**  
**( 16/01/2028 - 16/01/2035 )**

केतु की महादशा को 16/01/2028 आरम्भ और 16/01/2035 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु छठे भाव में स्थित है जहाँ से इसकी दृष्टि बारहवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको यश और ख्याति की प्राप्ति और प्रगति हुई होगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहा होगा। केतु की वर्तमान दशा में शत्रुओं पर विजय, सौभाग्य, यश तथा अधिकार मिलेगा।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में किसी बीमारी से लड़ने की क्षमता होगी। आपको छूत की बीमारी, बुखार, अल्सर, चर्मरोग, घाव और मूत्राशय में पीड़ा हो सकती है। कुछ सावधानी बरतकर इनसे बचाव किया जा सकता है।



अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। आपको अपने विरोधियों से लाभ मिलेगा। ननिहाल पक्ष से लाभ मिल सकता है। सट्टे तथा अन्य निवेश से लाभ होगा। केस-मुकदमे में निर्णय आपके पक्ष में होंगे। जीविका-व्यवसाय के लिए भाषा, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक, शरीर-विज्ञान, प्रौद्योगिकी, ज्योतिष, परा-चिकित्सा सेवा अथवा समाज सेवा के क्षेत्र का अध्ययन कर सकते हैं। चिकित्सा उपकरण, द्रव इंजीनियरी, लोहा-इस्पात, दवा, रेडियो के पुर्जे, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक के पुर्जे, रत्न, खनिज आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के कार्य-स्थान में माहौल अनुकूल रहेगा। आपको सहयोगियों-सहकर्मियों से सहयोग और वरिष्ठ कर्मचारियों से सदभाव मिलेगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को कार्य में सफलता, अच्छी आय और लाभ होगा। कार्य के सिलसिले में आपकी यात्रा हो सकती है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको आराम मिलेगा। आप गाड़ी बदल सकते हैं या नयी गाड़ी ले सकते हैं। आप जमीन-जायदाद की खरीद या बिक्री कर सकते हैं। आवास में परिवर्तन हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और सूर्य की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा की सम्भावना है।

शिक्षा :

शिक्षा उत्तम होगी और आप प्रतियोगिताओं और परीक्षाओं में अच्छा करेंगे। तकनीकी विषयों में आपकी रुचि होगी। कम्प्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग, भाषा, भौतिक शास्त्र, वायु-सैनिक के कार्य, दवा, विज्ञान, तत्त्वमीमांसा, प्रसारण, गुप्त विद्या तथा अन्य विषय आदि में भी आपकी रुचि हो सकती है। आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे और सभी परीक्षाओं प्रतियोगिताओं में सफल होंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को लाभ तथा समृद्धि मिलेगी। आपके जीवन साथी को कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी, अनावश्यक खर्च होगा तथा व्यर्थ की यात्रा होगी। आपकी माता के जीवन में कुछ परिवर्तन होगा, छोटी यात्रा होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जबकि पिता को यश, ख्याति और अधिकार प्राप्त होगा। आपके छोटे भाई-बहनों की जमीन-जायदाद में वृद्धि, उत्तम शिक्षा तथा कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या होगी जबकि बड़ों के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन, अचानक लाभ तथा हानि होगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान विरोधियों पर विजय मिलेगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मंगल की अन्तर्दशा में सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में लोकप्रियता मिलेगी और विभिन्न स्रोतों से लाभ होगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा तथा स्वास्थ्य-समस्या होगी। राहु के कारण कुछ समस्या हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा तथा विवाह होगा। शनि के कारण बच्चों से सुख और विरोधियों पर विजय मिलेगी जबकि बुध की अन्तर्दशा में यश और ख्याति

मिलेगी, जीवन में प्रगति तथा कार्यो में सफलता मिलेगी।



**अंतर्दशा :- केतु - केतु  
( 16/01/2028 - 13/06/2028 )**

आपके लिए केतु महादशा 16/01/2028 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 16/01/2028 को प्रारंभ होकर 13/06/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप लक्ष्यप्राप्ति के लिए दृढ़प्रतिज्ञा होंगे। स्पर्धियों से कष्ट हो सकता है। रिश्तेदारों से अच्छे संबंध रहेंगे। शत्रुओं पर विजय होगी, कर्ज से मुक्ति मिलेगी, नौकरी में मालिकों से लाभ होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं हो सकती हैं, खर्चे बढ़ेंगे। आपके पिता सफलता प्राप्त करेंगे। माता में स्पर्धियों पर विजय पाने की संकल्पशक्ति होगी। आपके भाई-बहनों के लिए अचल संपत्ति, उत्तम शिक्षा और माता से मधुर संबंधों का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, उन्हें सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी, मित्रों और भाइयों से मधुर संबंध होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धन संचित होगा, प्रसन्न रहेंगे, सहकर्मियों से उत्तम संबंध रहेंगे।

अगर आप सेवार्त हैं तो पर्याप्त आत्मविश्वास होगा, आय बढ़ेगी, सफलता मिलेगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के काम में कुछ परिवर्तन हो सकता है, यात्राएं होंगी, खर्चे बढ़ेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द, कंबल और तेल दान में दें।

**अंतर्दशा :- केतु - शुक्र  
( 13/06/2028 - 14/08/2029 )**

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, प्रसिद्ध और सम्मानित होंगे। व्यापार में लाभ होगा, धनी बनेंगे। साझेदार या विरासत के माध्यम से धन और अचल संपत्ति का लाभ हो सकता है। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। उत्तम भोजन का रसास्वादन करेंगे। दान-धर्म के कार्यों में रुचि होगी। आपकी मधुर वाणी से लोग प्रभावित होंगे।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे, उनका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आपके पिता के पास सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे। माता भाग्यशाली रहेंगी, मित्रों से सहायता मिलेगी। आपके भाई-बहनों के लिए धन, शत्रुओं पर विजय, लोकप्रियता, सफलता और प्रसिद्धि का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो उनका जीवन

आरामदेह रहेगा, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो स्वयं के प्रयास से ही सफलता मिल जाएगी। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए लक्ष्मीजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- केतु - सूर्य  
( 14/08/2029 - 19/12/2029 )**

आपके लिए केतु महादशा 16/01/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 14/08/2029 को प्रारंभ होकर 19/12/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में व्यापार में धनार्जन उत्तम हो सकता है। आपकी इच्छाओं की पूर्ति हो सकती है। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। सब कार्यों में सफलता मिलेगी। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे; समाज में सम्मान मिलेगा। जीवन में प्रगति होगी।

आपके जीवनसाथी सफल होंगे, उच्चपद मिल सकता है, सम्मानित होंगे। आपके पिता थोड़े प्रयास से ही सफलता प्राप्त कर लेंगे। माता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं, घर में सुख-साधन मौजूद रहेंगे।

आपके भाई-बहनों के लिए इच्छाओं की पूर्ति, सौभाग्य, सफलता और धनी होने का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो लघु यात्राएं हो सकती हैं, उच्च पद प्राप्त कर सकते हैं, लेखन आदि से लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय और सक्रियता बढ़ेगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गायत्री मंत्र का जाप करें।

**अंतर्दशा :- केतु - चन्द्र  
( 19/12/2029 - 21/07/2030 )**

आपके लिए केतु महादशा 16/01/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 19/12/2029 से प्रारंभ होकर 21/07/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और धनी बनेंगे। धनार्जन उत्तम होगा, प्रसन्नचित्त रहेंगे। बड़े भाई-बहनों और चाचाओं से उत्तम संबंध रहेंगे। धन का संचय होगा। निवेश से लाभ हो सकता है। कला और खेलों में रुचि हो सकती है। दूसरों की भलाई के काम करेंगे।

आपके जीवनसाथी को सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। आपके पिता को संचार माध्यम से लाभ संभव है। माता के जीवन में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं, अप्रत्याशित घटना घट सकती है।

आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, समृद्धि, समाज में सफलता और लोकप्रियता का संकेत है। आपकी संतान अगर कार्यरत है तो यात्रा हो सकती है; व्यापार से लाभ होगा। अगर आप सेवारत हैं तो आपके कुछ स्पर्धी हो सकते हैं; कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं की आय उत्तम होगी। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए भैरवजी की उपासना दूध से करें।

**अंतर्दशा :- केतु - मंगल  
( 21/07/2030 - 17/12/2030 )**

आपके लिए केतु की महादशा 16/01/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 21/07/2030 को प्रारंभ होकर 17/12/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। दिल खोल कर पैसा खर्च कर सकते हैं। सफलता में बाधा आ सकती है। पुराना ढांचा बदलेगा, नयापन आएगा। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। कार्यक्षमता उत्तम होगी। विरासत से या जीवनसाथी के धन से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी की आय उत्तम होगी, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि होगी। माता की आय उत्तम होगी, घरेलू सुख अच्छा होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए खेलकूद में रुचि, साहित्य से लगाव और संभवतः विवाह का संकेत है। आपके बड़े भाई-बहनों को साझेदारी या व्यापार से लाभ होगा, विवाह हो सकता है।

आपकी संतान सफल होगी, स्पर्धियों पर विजय होगी, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो तबादला या परिवर्तन हो सकता है। परामर्शदाताओं के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा, निवेश लाभप्रद हो सकता है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए तंदूर में मीठी रोटी बनाकर उसे दान करें।

**अंतर्दशा :- केतु - राहु  
( 17/12/2030 - 04/01/2032 )**

आपके लिए केतु महादशा 16/01/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 17/12/2030 को प्रारंभ होकर 04/01/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। विदेश यात्रा हो सकती है। नयी मित्रता लाभकारी हो सकती है। व्यापार में उन्नति होगी। कार्यों में प्रारंभ में बाधाएं आ सकती हैं। शत्रुओं पर विजय होगी, चिंताएं खत्म होंगी, कर्ज से मुक्ति मिलेगी। नौकरी में या मातहतों के माध्यम से लाभ होगा। खेलकूद आदि में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी का कार्यालय उत्तम होगा; सब का सहयोग प्राप्त होगा। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं; घरेलू सुख रहेगा। माता भाग्यशाली और धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए प्रसिद्धि, धनलाभ, धनसंचय, सुखी पारिवारिक जीवन का संकेत है।

आपकी संतान को अचानक लाभ हो सकता है या परिवर्तन आ सकता है। उन्हें सफलता के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो तबादला या अन्य परिवर्तन संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों से लाभ होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे, उत्साह उत्तम रहेगा। व्यापारी स्पर्धियों पर सफलता प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द, सतनजा और नीले वस्त्र दान करें।